विद्या भारती संकुल संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

जनवरी 2023 | पौष - माघ, विक्रमी सं. 2079

विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद सम्मेलन

ग्राम विकास का शिवपुरी मंथन : संयोजक मंडल सम्मेलन

स्वाधीनता के बाद पहली बार 423 ग्रामों के 2500 ग्राम ऋषियों ने ग्राम विकास पर किया सामूहिक चिंतन

नर्मदांचल जनसंवाद यात्रा

दिखावे के लिए नहीं, परिणामयुक्त कार्य करें: भैयाजी जोशी

ग्राम विकास का शिवपुरी मंथन : संयोजक मंडल सम्मेलन

स्वाधीनता के बाद पहली बार 423 ग्रामों के 2500 ग्राम ऋषियों ने ग्राम विकास पर किया सामूहिक चिंतन

भोपाल। साक्षरता, समरसता, स्वदेशी, संस्कृति, संस्कार, स्वावलंबन, सुरक्षा एवं पर्यावरण आदि ग्राम विकास के 9 आयामों पर विभिन्न सत्रों में चले विमर्श के बाद लेखक ने उन्हें टटोलने की कोशिश की तो सभी ने खुलकर विचार रखे। अधिकांश सहभागी बंधुओं ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में संयोजक मंडल की भूमिका को सम्मेलन में बहुत स्पष्टता के साथ समझाया गया। आदर्श हिन्दू परिवार विषय पर चर्चा सत्र बहुत उपयोगी रहा।

स्वाधीनता के बाद पहली बार अब ग्राम विकास के विषय पर 423 ग्रामों के 2500 ग्राम ऋषियों ने बैठकर सामूहिक चिंतन किया। सम्मेलन में शामिल ये लोग बड़े एकेडमिशियन थे, ऐसा नहीं था, लेकिन दुनियां कैसे स्वस्थ, सुखी रह सकती है ये मंत्र जो उन्हें परम्परा से मिले थे और ग्रंथों को पढ़कर खोजे थे, बस उन्हें बांटने आये थे। इस विमर्श में सभी की कुछ साझा चिंतायें भी थीं। कई लोगों ने बताया कि पहले कभी चौपाल के अलाव के पास बैठकर लोग गांव की बेहतरी के लिये सोचते थे, घर की मुंडेरों पर गौरैया चहकती थीं, पोखर को तैरकर पार करने की होड़ लगती थी। अखाड़े के उस्ताद गांव में ही जोर कराते थे। गुरुकुल केवल विद्याध्ययन के केन्द्र नहीं थे बल्कि सामुदायिक सहकारी जीवन निर्माण की पाठशालायें थी। हर घर में गाय की पूजा होती थी। साझे परिवार थे और एक कमाने वाला सबको खिलाता था। टेसू के बिखरे फूलों से ऐसा लगता था जैसे धरती ने पीताम्बरी ओढ़ ली हो। गांव की बेटी के ब्याह में पूरा गांव पैर पखारता था और तन-मन-धन से सहयोग करता था। गांव में सभी तीज-त्यौहार मिलकर मनाये जाते थे, होली के फाग में पूरा गांव मस्ती में झूम उठता था। सामाजिक समरसता का ऐसा अनूठा उदाहरण कही दिखाई नहीं देता है। पंचायतें बैठती थीं और बड़े-बड़े निर्णय पंच परमेश्वर करते थे। ऐसे ही आदर्श गांवों का वर्णन अपने शास्त्रों में मिलता है -

ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा।
पाठशाला मल्लशाला, प्रतिपर्व महोत्सवः ।।

तब केवल अयोध्या में ही नहीं बल्कि पूरे देश में रामराज्य था। घर के कपाट कभी बंद नही होते थे। प्रत्येक स्त्री मां, बहन, बेटी का स्वरूप होती थी। पराये धन को हाथ लगाना पाप माना जाता था। चींटी को दाना मिलता था और हाथी को मनभर मिलता था -

चीटी को चुनभर देते हैं, हाथी को मन भर देते हैं।
ऐसे दीनानाथ दयालु, सबका मन हर लेते हैं।।

गांव में कोई लाचार-बीमार नही था। सच्चे अर्थो में ग्राम स्वराज्य कैसा होता है, इसकी जीती जागती मिशाल थे हमारे गांव। लगभग एक हजार वर्षों की पराधीनता के कालखण्ड में भी गमई जवानों के ईमान को कोई खरीद नहीं सका। जब बड़े

-बड़े बुर्ज वाले नवाब और बड़े-बड़े रसूखदार अंग्रेजों की विरूदाबलियां गाते नहीं थकते थे तब भी इन्ही गवरूओं ने अपने धर्म, संस्कृति के लिए देश की इंच-इंच भूमि बचाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी लेकिन आज ग्राम्य जीवन का ऐसा स्वरूप दिखाई नहीं देता।

गांधीजी हमेशा कहा करते थे कि भारत ग्रामों में बसता है। गांधी जी जिस हिंद स्वराज्य की बात करते थे वह वास्तव में ग्रामराज ही था। आज होटलिंग, बॉटलिंग शगल बनता जा रहा है। आचरणभ्रष्ट, पथभ्रष्ट बेइमानों की बुलंदियों के आगे सज्जन शक्तियां असहाय सी लगती हैं, लेकिन अभी भी समाधान बाकी है। राष्ट्र के परम वैभव का सपना साकार हो सके, इसके लिए हमें ग्रामों की ओर लौटना होगा। सीमेंट, कंक्रीट के ये सघन शहर आबादी का ज्यादा दबाव सहन करने की स्थिति में नहीं हैं। ग्रामों को उद्यमिता, समरसता, स्वावलंबन के मॉडल के रूप में खड़ा करना होगा। स्वदेशी का भाव जगाकर 'सबके साथ सबका साथ' यह मंत्र लेकर आगे बढ़ेंगे तो जल्दी ही भारत को सोने की चिड़िया बनने से कोई नहीं रोक सकता। आज हमारे सामने श्वांसों का संकट गहराता जा रहा है। अपने आस-पास 50 मीटर के पर्यावरण को शुद्ध, सुरक्षित रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। पानी की बूंद-बूंद को सहेजने, बचाने के उपाय करने होंगे। छोटे-बड़े, अगड़े-पिछड़े, ऊंच-नीच की मजबूत दीवारों को ढहाये बिना सामाजिक समरसता केवल वादों-दावों का विषय बनकर रह जायेगी। जड़ी-बूटियों को सहेज कर उनका उपयोग सुनिश्चित करने से स्वस्थ भारत जन्म लेगा।

गांवों को समर्थ, स्वावलंबी बनाना होगा

शिवपुरी मंथन के बाद एक चर्चा सर्वत्र चल पड़ी है कि 'जग सिरमौर बनायें भारत' का रास्ता गांव की पगडंडियों से निकलेगा। गांवों को समर्थ, स्वावलंबी बनाकर ही स्वाभिमानी राष्ट्र खड़ा हो सकेगा और यह पश्चिम की नकल से नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा और अधुनातन के मेल से होगा। यह कार्य किसी एक व्यक्ति के भरासे पूर्ण होने वाला नही है बल्कि इस राष्ट्रीय अनुष्ठान के उद्यापन के लिए लाखों लोगों को आगे आना होगा।

अहं से बाहर आकर हम सबको वयं और विराट होना होगा। इस अमृतकाल में शिवपुरी जैसे अनेक चिंतन शिविर आयोजित करने पड़ेंगे।

इस चिंतन-मंथन से निकलने वाले हलाहल को हलक में पचा जाने वाले शंकर कितने हैं, उतने प्रमाण में सुखी, समृद्ध विश्व और वैभव सम्पन्न भारत आकार ले सकेगा। भारत का विजयी होना उसकी नियति है, बस गोवर्धन पर्वत को एक अदद कृष्ण की तलाश है-

कोई चलता पदचिन्हों पर, कोई पदचिन्ह बनाता है।
है वही सूरमा वीर पुरूष धरती पर पूजा जाता है।।

इस सम्मलेन में मा. डॉ मनमोहन वैद्य सह सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मा. श्रीराम आरावकर अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, डॉ रवींद्र कान्हेरे अखिल भारतीय उपाध्यक्ष एवं श्री भालचंद्र रावले क्षेत्र संगठन मंत्री का मार्गदर्शन व विशेष सान्निध्य प्राप्त हुआ।

विद्या भारतीय पूर्व छात्र परिषद द्वारा स्वामी विवेकानंद की जयंती पर प्रदर्शनी की गई आयोजित , सांसद वीके सिंह ने किया उद्घाटन

युवाओं के सदैव प्रेरणादायक रहेंगे स्वामी विवेकानंद जी - जनरल डॉ. वी.के. सिंह जी

ग़ाज़ियाबाद | स्वामी विवेकानंद जयंती (जनवरी 12, 2023) के अवसर पर पूर्व छात्र परिषद ग़ाज़ियाबाद द्वारा रेलवे स्टेशन पर एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह प्रदर्शनी लगभग 24 घंटे लगी रही। ग़ाज़ियाबाद रेलवे स्टेशन से प्रतिदिन 2 लाख लोग निकलते हैं। जिन्हे ये प्रदर्शनी देखने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रदर्शनी का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री जनरल वी. के सिंह जी (भारत सरकार) व ब्राह्मचारिणी परिणीति जी (अम्मा जी) - संचालिका चिन्मय मिशन -ग़ाज़ियाबाद केंद्र द्वारा किया गया।

परम पूज्य श्री गुरुजी का शैक्षिक प्रबोधन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूज्य माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्री गुरुजी कुशल संगठक होने के साथ-साथ समाज जीवन के सभी पक्षों पर हिन्दुत्व की मूलभूत अवधारणाओं के आलोक में समग्र चिन्तन किया करते थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राणिशास्त्र के प्राध्यापक रहते हुए उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में स्वयं के अनुभव से कुछ विचार अर्जित किए थे। उनके उद्बोधनों में समय-समय पर शिक्षा के सम्बन्ध में उनके सुस्पष्ट विचार प्रकट हुए हैं। उनमें से कुछ प्रमुख बिन्दु यहाँ प्रस्तुत हैं।

विद्यालय संचालन का उद्देश्य

श्रीमद्भगवद्गीता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कुरुक्षेत्र के रजत जयन्ती उत्सव एवं गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र के भूमि पूजन (29 जनवरी 1973) के अवसर पर श्री गुरुजी पधारे थे। उस समय उनके उद्बोधन के कुछ अंश –

“अनेक वर्ष पूर्व इस विद्यालय के भवन शिलान्यास के अवसर पर में उपस्थित था। विद्यालय प्रारंभ करने का एक उद्देश्य सामने रखा गया था। प्रचलित शिक्षा प्रणाली में धर्म, नीति, राष्ट्रभक्ति, मातृभूमि के प्रति अनन्य श्रद्धा आदि के संस्कार देने की कोई प्रभावी व्यवस्था नहीं, इस कमी को दूर करने का प्रयास इस विद्यालय में होगा।

अंग्रेजों ने योजनापूर्वक इस बात का प्रयास किया कि इस देश का राष्ट्रीय समाज अपने इतिहास, संस्कृति व सभ्यता को भुला दे। इसी प्रकार की स्वत्व शून्य शिक्षा देश में चलती रही। उस समय इस कूटनीति को जानकार लोगों ने पहचाना और इसीलिए स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी शिक्षा का विरोध भी हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा के कुछ प्रयोग भी हुए। किन्तु पराधीनता के काल में स्वत्व और स्वाभिमान का जो आवेश था वह परकीय शासन जाते ही लुप्त सा हो गया। अपने गौरव के विस्मरण और विदेशियों की अंधी नकल के फेर में पड़ कर हमने अपने मूलगामी सिद्धांतों को भुला दिया। रहन, सहन, चारित्र्य, कर्तव्यबोध, वैचारिक भूमिका आदि किसी भी दिशा में देखें तो पायेंगे कि विवेक शून्य अन्धानुकरण मात्र चल रहा है। इसीलिए शिक्षा का वास्तविक अर्थ समझने में हम असमर्थ हो रहे हैं।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ है मनुष्य को अपने जीवन के अंतिम लक्ष्य की ओर उन्मुख करना

वास्तव में शिक्षा तो वह है जिसके द्वारा मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए जीवन के सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को पा सके। गीता के अंतिम अध्याय में इस लक्ष्य का स्वयं श्रीकृष्ण उल्लेख करते हैं –

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
माम्-एवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे॥

‘मन्मना’ यानी अपने अंत:करण में मुझे समा ले। ‘मद्भक्तो’ यानी मुझसे ‘विभक्त’ न रहे। “मद्याजी” अर्थात् मेरे लिए यज्ञ-

पूर्वक जीवन चला और ‘मां नमस्कुरु’ माने वह मुझे नमस्कारपूर्वक समर्पण कर दे। यहाँ श्रीकृष्ण नामक व्यक्ति की नहीं अपितु सृष्टि की स्थिति, उत्पत्ति और प्रलय की मूल शक्ति परमेश्वर के रूप में है, जिसके लिए कहा गया – मन्मना भव।

इस अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य में अनेक सद्गुण आवश्यक हैं जिनका संस्कार बचपन से करना होगा। सच्चाई से रहना, किसी के प्रति द्वेष या घृणा का भाव न रखना, काया-मनसा-वाचा पवित्र रहना, आत्म नियंत्रण रखते हुए अपने अन्त:करण को इस प्रकार विशाल बनाना कि पूरा विश्व ही मेरा परिवार है और इस समाज की सेवा में स्वयं को समर्पित कर देना किन्तु उसमें कोई स्वार्थ मन में न आने देना आदि।

भारतीय जीवन दृष्टि की विशेषता

सम्पूर्ण विश्व को अपना कुटुम्ब मानने में यह तथ्य अन्तर्भूत है। भारतीय जीवन दृष्टि है कि प्रत्येक भू-भाग में रहने वाला समाज अपने वैशिष्ट्य के अनुसार जीवनयापन करे। सभी राष्ट्रों को अपनी परम्परागत जीवन प्रणाली के वैशिष्ट्य का आविष्कार करते हुए तथा उन विशेषताओं का संवर्धन करते हुए आपस में मित्रता, प्रेम एवं बन्धुता से रहना चाहिए। यह दृष्टि यदि नहीं रही, क्षुद्र स्वार्थवश मित्रभाव का लोप हो गया तो नित्य संघर्ष होगा। अपने स्वार्थो के लिए कोई राष्ट्र अन्य किसी को स्वतंत्र नहीं रहने देगा।

अपनी राष्ट्रगत विशेषताओं को सुरक्षित रखना मानव कल्याण का ही कार्य है, किन्तु सरल नहीं है। विश्व की वर्तमान संघर्षपूर्ण स्थिति में इस कठिन कार्य को वे ही कर सकते हैं जो राष्ट्र की परम्पराओं को जानते हैं, अपने पूर्वजों का समुचित आदर और राष्ट्र के मातृभूमि की प्रति अविचल श्रद्धा रखते हैं तथा अपने अन्त:करण में इस भाव को धारण करते हैं कि राष्ट्रहित के सामने व्यक्तिगत हित का विचार नहीं करना। जो राष्ट्रदेव के पूजन के लिए अपने जीवन को पूर्ण पवित्र बनाते हैं, ऐसे व्यक्तियों की संगठित शक्ति द्वारा ही राष्ट्र का संरक्षण एवं संवर्धन होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए राष्ट्रभक्त एवं चरित्रवान् लोग तैयार करना आवश्यक है, जिसके लिए बाल्यजीवन के संस्कार सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

सारांश रूप में श्रीगुरुजी कहते हैं, प्रत्येक छात्र के मस्तिष्क में यह बात अच्छी तरह से बैठा देनी होगी कि मैं अपने राष्ट्र की

सेवा करूंगा; राष्ट्र में ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न धाराओं को पुष्ट करूंगा; आधुनिक जगत में प्रगति के जो-जो मार्ग दिखाई देते हैं, मैं उन सबका गहन अध्ययन करूंगा; अपने स्वार्थ का लेशमात्र भी विचार नहीं करूंगा। प्रत्येक छात्र के अन्तःकरण में ऐसी निश्चयात्मक बुद्धि निर्माण करने के लिए ही विद्यालय की आवश्यकता है।
(श्री गुरु जी समग्र दर्शन, खण्ड ७)

शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शिक्षक

भारत में शिक्षा की मौलिक अवधारणा है कि शिक्षा मानव की अन्तर्निहित शक्तियों का प्रकटीकरण है, न कि केवल छात्र के मस्तिष्क में कुछ जानकारियों को ठूँसा जाना। हमारी मान्यता है कि हमारे अन्दर जो परम चैतन्य विद्यमान है, उसी परमसत्य की अनुभूति और अभिव्यक्ति शिक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य है। हमारे ऋषि-मनीषियों-सन्तों और तपस्वियों ने इस उद्देश्य की प्राप्ति की प्रक्रिया के सम्बन्ध में जो दिशा निर्देश किए हैं, उन्हें बालक के जीवन में क्रियान्वित करने में शिक्षक की प्रमुख भूमिका है। शिक्षक का प्रथम कार्य यम व नियम के दस सिद्धान्तों को विद्यार्थियों के मन में बैठाना है। अधिकांश युवक नहीं जानते कि जीवन के विविध आयामों के उत्कृष्ट ज्ञान से समृद्ध हमारा कोई प्राचीन इतिहास भी है, क्योंकि उनके छात्र जीवन में उनके शिक्षको और माता-पिता ने उन्हें इस बारे में बताया ही नहीं। आज की अध्ययन प्रणाली में सीखने की इच्छा तथा प्रयास का अभाव है। स्तरीय लेखकों की पुस्तकों को विदाई दे कर गाइडों-कुंजियों का प्रचलन हो गया है। ट्यूशन को सफलता का सरल उपाय मान लिया गया है। वस्तुतः अच्छे शिक्षकों को इसे अपनी सामर्थ्य तथा कर्तव्यनिष्ठा का अपमान समझना चाहिए। इन शार्टकट्स का दुष्प्रभाव है कि विद्यार्थियों में समझने की क्षमता, पहल करने का स्वभाव तथा इच्छाशक्ति में ह्रास हो रहा है। 'संक्षिप्त मार्गों' के असफल होने पर विद्यार्थी फिर 'अनैतिक मार्गों' से भी सफलता पाने के लिए प्रवृत्त होता है।
(विचार नवनीत, पृ. २४१)

मूल आधार को न भूलें

राष्ट्रीयता के ठोस आधार के बिना मानवता या वैश्विकता की बातें बेमानी हैं। हमारे राष्ट्रीय दर्शन ने सदैव से समस्त मानव जाति के कल्याण को अंगीकार किया है। हमारे राष्ट्रवाद का उज्ज्वल रूप ही हमारे बच्चों को मानव कल्याण के उच्चतम मूल्यों की ओर ले जायेगा।

शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध

विद्यार्थी शेष समाज से पृथक कोई वर्ग नहीं है। समाज के गुण-दोष ही उनमें आते हैं। अपरिपक्व अवस्था, अनुभव हीनता तथा वयसुलभ भावावेश के प्राबल्य के फलस्वरूप उनके क्रियाकलाप अदम्य उद्रेक के रूप में प्रकट होते हैं। उन पर सद्व्यवहार के कोई संस्कार नहीं किए जाते। न तो उनके सामने कोई ऐसा उच्च ध्येय है जिसके लिए वे अपनी शक्ति लगाये और न ही उन्हें समाज जीवन में प्राय: कोई प्रेरणा-दायक जीवनादर्शन दिखाई देता है। उन्हें समुचित मार्गदर्शन करने के लिए शिक्षकों में भी विशेष पात्रता की आवश्यकता है – उन्हें विषय का उत्तम ज्ञान हो, उनका चरित्र निष्कलंक हो, विद्यार्थियों के प्रति प्रेम तथा आत्मीयतापूर्ण व्यवहार उनका सहज स्वभाव हो।
(विचार नवनीत,पृ. ३७२)

परिवार तथा समाज की भूमिका

बालकों को ठीक दिशा देने की सारी जिम्मेदारी केवल शिक्षकों पर ही नहीं है। अपने देश में समाज की लघुतम इकाई परिवार है। बच्चे अनुकरण से सीखते हैं। परिवार में उन्हें जैसा वातावरण मिलेगा, वे उसी प्रकृति के बनेंगे। माता को अपने यहाँ 'प्रथम गुरु' कहाँ गया है। कर्तव्यनिष्ठा, वचनपालन, श्रम के प्रति सम्मान, समाज के सहयोग के लिए तत्परता और मातृभूमि के प्रति भक्ति आदि सद्गुण प्रारम्भिक जीवन से ही सिखाये जा सकते हैं।

किशोर तरुण आयु के विद्यार्थियों में सेवा भाव तथा सामूहिक जीवन जीने के स्वभाव का विकास किया जाना चाहिए। इसके लिए उनकी संगठित शक्ति को समुचित दिशा दी जानी आवश्यक है। विद्यार्थी संगठनों को राजनैतिक दलों से मुक्त रखा जाना चाहिए।

मनोरंजन के दृश्य-श्रव्य साधनों तथा समाचार पत्र-पत्रिकाओं की भी विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में बड़ी भूमिका होती है। कैसी सामग्री परोसे, इसके लिए इन माध्यमों को भी अपनी जिम्मेदारी का पालन करना चाहिए। आधुनिकता और फैशन के नाम पर कुछ भी प्रदर्शित करना, यह छुट नहीं होनी चाहिए।

विदेशों में शिक्षा कैसी ग्रहण करें?

गुजरात के एक बन्धु इंजीनियरिंग के अध्ययन के लिए अमेरिका के इलियोनिस विश्वविद्यालय गए, जहाँ से उन्होंने श्री गुरुजी को पत्र लिखा। उसके उत्तर में श्री गुरूजी ने लिखा – "आप अधिक पात्रता प्राप्त कर कुशलतापूर्वक स्वदेश लौटें। वहाँ के समाज जीवन, लोगों के उत्तम गुणों, व्यक्तिगत व सामाजिक चरित्र, राष्ट्रीय परम्पराओं तथा नीतिमत्ता आदि का अध्ययन करना अच्छा रहेगा। उद्योग व कृषि आदि की उन्नति के प्रयासों, शैक्षणिक संस्थाओं तथा उनके शिक्षकों छात्रों की मनोवृत्ति को उत्तम रीति से सीखना लाभदायक होगा। कोई समाज पूर्णरूपेण निर्दोष नहीं होता अतः दोषों की ओर ध्यान जाता है। किन्तु प्रयत्नपूर्वक अच्छाई देखना ही लाभदायक है। आत्मोन्नति का यही मार्ग है। ....इस प्रकार अध्ययन करने से स्वदेश में स्व-समाज की परम्पराओं के आधार पर आधुनिक जीवन रचना करने का ज्ञान हो सकेगा और आप राष्ट्र के लिए अतीव उपकारी सिद्ध होंगे।"
(श्री गुरुजी समग्र दर्शन, खण्ड-३, पृ. ११७)

– अवनीश भटनागर
(अखिल भारतीय महामंत्री, विद्या भारती)

एकल विद्यालय की पहल, पॉलिथीन मुक्त हुआ गांव

राजस्थान। श्रीगंगानगर जिले के अनूपगढ़ तहसील के 78 जीबी गांव के एकल विद्यालय के आचार्य राजीव कुमार ने सोचा कि गांव में पॉलिथीन की थैलियां एवं रैपर बिखरे रहते हैं जिसे खाकर गायें मर रही हैं और भूमि भी दूषित हो रही है। इस पर एकल विद्यालय के भैया-बहनों और आचार्यों ने मिलकर गांव को पॉलिथीन मुक्त करने का संकल्प लिया। भैया-बहनों को प्रतिदिन गांव की गलियों से प्लास्टिक रैपर एवं थैलियां विद्यालय लाने को कहा। प्रतिदिन कौन कितने रैपर एवं थैलियां लेकर आया, गिनकर एक गड्ढे में डालना प्रारंभ किया गया। जो भैया-बहन ज़्यादा पालिथीन लाए उनका ताली बजवाकर उत्साहवर्धन किया गया। यह क्रम निरंतर चलता रहा और धीरे-धीरे गांव की गलियों में प्लास्टिक की थैली व रैपर दिखने बंद हो गए। जब गलियों में पॉलिथिन थैली नहीं मिली तो झाड़ियों से बीनकर प्लास्टिक लाना शुरू किया। बाद में घरों में पॉलिथीन उपयोग में न लाई जाए, इसके लिए अभिभावकों की बड़ी बैठक कर पॉलीथिन से होने वाले नुकसान के बारे में जागरुक कर गांव को पॉलिथीन मुक्त बनाने का संकल्प कराया गया। गांव के सभी घरों में संस्थान द्वारा निर्मित कपड़े की थैलियां वितरित की गईं और बाजार से इन्हीं थैलियों में सामान लाने के लिए आग्रह किया गया। भैया-बहनों ने पॉलिथीन मुक्ति का संदेश देने के लिए हाथ में तख्तियां लेकर जागरूकता रैली भी निकाली। विद्यालय के प्रयास से पालिथीन से ईको ब्रिक बनाने प्रारंभ हो गए। इस सफल प्रयास से कई अन्य गांवों में भी पॉलिथीन से मुक्ति के प्रयत्न प्रारंभ हुए हैं।

दिखावे के लिए नहीं, परिणामयुक्त कार्य करें: भैयाजी जोशी

नर्मदांचल जनसंवाद यात्रा

गोविंदनगर। नर्मदापुरम के बनखेड़ी गोविंदनगर स्थित भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोकन्यास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह माननीय भैयाजी जोशी ने नर्मदांचल जनसंवाद यात्रा को संबोधित करते हुए कहा कि वसुंधरा की रक्षा का संकल्प केवल भारत ही ले सकता है। सुजलाम् सुफलाम् के मंत्र को सफल बनाने के लिए पूरे समाज को भागीरथी तपस्या करनी होगी। माँ नर्मदा के प्रति भक्तों की आस्था और उनका अस्तित्व देवस्वरूप पर्वत, जंगल एवं नदियों के अस्तित्व पर टिका है। साधु-संतों का मार्गदर्शन, प्रयोगकर्मी संस्थाएं, समाज एवं सरकार ये चार स्तम्भ मिलकर जीव सृष्टि की रक्षा कर सकते हैं। माननीय भैयाजी जोशी ने कहा कि अच्छे काम व आवश्यक काम में अंतर होता है। हमें दिखावे के लिए नहीं परिणाम युक्त कार्य करने चाहिए। सत्कर्मों के लिए साधन नहीं साधना आवश्यक है और सज्जन वही है जो किसी के झंझट में न पड़े। समाज का चिंतन विश्व कल्याण के लिए होना चाहिए। इस अवसर पर नर्मदांचल के कोने-कोने से पधारे प्रबुद्धजनों ने भी विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन न्यास प्रबंध कार्यकारणी समिति के सदस्य भूपेंद्र सिंह जी पटेल ने किया। नर्मदांचल जनसंवाद यात्रा का आयोजन मध्य प्रदेश की जीवनरेखा माँ नर्मदा के पुरातन स्वरूप, वर्तमान परिवेश, प्राकृतिक सौंदर्य, जैव विविधता, जल संरक्षण जैसे गम्भीर विषयों को लेकर विचार मंथन के लिए किया गया। पूज्य दंडी स्वामीजी नृसिंह विजेंद्र सरस्वती विट्ठल आश्रम बरमानब्रह्मांड का भी नर्मदा संवाद यात्रा के दौरान भाऊसाहब भुस्कुटे लोक न्यास गोविन्द नगर में रुकना हुआ।

समाज के अंतिम व्यक्ति को स्वावलंबी बनाना ही लक्ष्यः ब्रह्माजी राव

विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद सम्मेलन

झारखंड। विद्या भारती के अखिल भारतीय मंत्री ब्रह्माजी राव ने कहा कि विद्या भारती का कार्य समाज आधारित है, जहां का समाज सबल और सुदृढ़ होगा, वह राष्ट्र स्वाभाविक रूप से सबल होगा।

श्रीकृष्ण चंद्र गांधी शैक्षिक नगर में आयोजित विद्या भारती के पूर्व छात्र परिषद सम्मेलन में मा. डॉ. कृष्णगोपाल जी सह सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विशेष सान्निध्य प्राप्त हुआ।

अखिल भारतीय मंत्री श्री ब्रह्माजी राव ने अपने उदबोधन कहा कि किसी भी राष्ट्र का मूल्यांकन वहां के समाज को देखकर किया जा सकता है। उसी प्रकार विद्या भारती का मूल्यांकन यहां के पूर्व छात्रों की जीवन शैली है। हमारे लिए महत्वपूर्ण विषय यह है कि हमारा पूर्व-छात्र अपना व्यक्तिगत एवं परिवारिक जीवन किस प्रकार व्यतीत करते हुए समाज के अभावग्रस्त व्यक्ति को स्वावलंबी बनाकर राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने में सहयोगी सिद्ध हो रहा है। पंचपदी शिक्षा पद्धति के आधार पर जो शिक्षा दी गई है उसके माध्यम से पूर्व छात्र की दृष्टि भावी पीढ़ी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यालय समिति, पूर्व छात्र एवं प्रधानाचार्य विद्या भारती के लक्ष्य के अनुरूप मिलकर काम करेंगे तो निश्चित ही भावी पीढ़ी का सर्वांगीण विकास संभव हो पाएगा तथा हम राष्ट्र को सबल एवं सुदृढ़ बनाने में सफल हो सकेंगे। विद्या भारती उत्तर पूर्व क्षेत्र के क्षेत्रीय मंत्री राम अवतार नरसरिया ने कहा कि विद्या भारती के पंचप्राण में छात्र/पूर्व छात्र, आचार्य/प्रधानाचार्य, अभिभावक, समिति सदस्य एवं समाज के शुभेच्छुक लोग हैं और उनके समन्वय से ही शिक्षा के क्षेत्र में विकास संभव है। ये पंचप्राण मिलकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को प्रभावी बनाने का काम करेंगे, ऐसी अपेक्षा है। इस अवसर पर क्षेत्रीय संगठन मंत्री ख्यालीराम, प्रदेश सचिव अजय कुमार तिवारी, सतिश्वर प्रसाद सिन्हा, पूरे झारखंड से आए समिति के पदाधिकारी, प्रधानाचार्य एवं पूर्व छात्र संयोजक, प्राचार्य डॉ रामकेश पाण्डेय, फणीन्द्र नाथ, विभाग निरीक्षक राँची, आदि उपस्थित रहे। संचालन जितेन्द्र कुमार तिवारी प्रधानाचार्य ने किया।
इस सम्मेलन में 1100 पूर्व छात्रों की सहभागिता रही।

संस्कारयुक्त शिक्षा से ही भारत बनेगा विश्व गुरुः डॉ. कृष्ण गोपाल

समिति सह स्वावलंबी पूर्व छात्र सम्मेलन

पटना। केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक विद्यालय केशवपुरम मरचा मरची में विद्या भारती उत्तर-पूर्व क्षेत्र के तत्वावधान में दो दिवसीय समिति सह स्वावलंबी पूर्व छात्र सम्मेलन का आयोजन किया गया। उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह माननीय गोपाल कृष्ण जी ने कहा कि समाज में परिवर्तन के लिए बालकों को संस्कारयुक्त शिक्षा देना अनिवार्य है। इससे ही भारत विश्व गुरु बनेगा। वर्तमान में विद्या भारती के 13 हजार विद्यालय हैं जहां 1 लाख 15 हजार आचार्य 30 लाख भैया-बहनों को संस्कारयुक्त शिक्षा दे रहे हैं। बच्चों के लिए लौकिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के साथ भारतीय शिक्षण पद्धति एवं भारतीय संस्कृति को अपनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया की ज्ञान स्थली रहा है। माननीय गोपाल कृष्ण जी ने पूर्व छात्रों से विद्या भारती के विद्यालयों को सहयोग

करने की अपील की।
सम्मेलन में 1500 पूर्व छात्र, 500 समिति सदस्य, 10 केन्द्रीय अधिकारी, 10 क्षेत्रीय अधिकारी और 40 प्रांतीय अधिकारी शामिल रहे। विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री गोबिंद चंद्र महंत ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता पूर्व छात्र

जारी...

डिप्टी कमिश्नर अभिषेक आनंद व संचालन पूर्व छात्र कौशलेश कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय मंत्री कमल किशोर सिन्हा, क्षेत्रीय प्रचारक रामनवमी प्रसाद, क्षेत्र कार्यवाह डा.मोहन सिंह, दक्षिण बिहार के प्रांत प्रचारक राणा प्रताप सिंह, उत्तर बिहार के प्रांत प्रचारक रविशंकर, विभाग प्रचारक आशीष कुमार, विद्या भारती उत्तर-पूर्व क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मं त्री ख्याली राम, क्षेत्र सचिव नकुल कुमार शर्मा, दक्षिण बिहार प्रांत के प्रदेश मंत्री भरत पूर्वे, प्रदेश सचिव प्रदीप कुमार कुशवाहा, उत्तर बिहार के प्रदेश मंत्री डॉ सुबोध कुमार, प्रदेश सचिव मुकेश नन्दन, सहसचिव रामलाल सिंह, पूर्व छात्र के केंद्रीय संयोजक राहुल कुमार, दक्षिण बिहार के प्रांतीय मीडिया संयोजक राकेश नारायण अम्बष्ट प्रधानाचार्य मनोज कुमार मिश्र, प्रांतीय पूर्व छात्र प्रमुख अनुराग महाराणा, डॉ. रंजीत कुमार वर्मा आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

साधन से नहीं, विवेक से मिलता है सुखः डॉ. शाश्वतानंद गिरि

श्रीमद्भगवद्गीता प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

कुरुक्षेत्र। विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान में श्रीमद्भगवद्गीता प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम के नौवें दिन 'सुखी परिवार और गीता' विषय का शुभारंभ माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। विषय को समझाते हुए डॉ. शाश्वतानंद गिरि ने कहा कि बुद्धि, विवेक से ही सुखी रह सकते हैं। किसी साधन से सुखी होना संभव नहीं है। जो आनंद किसी विषय से, किसी वस्तु से मिले, उसका नाम सुख है और जो सुख बिना किसी विषय के स्वयं अपने ही स्वरूप का हो, उसका नाम आनंद है। जीवन की, व्यक्ति की पहचान या व्यक्तित्व का परीक्षण बड़ी-बड़ी बातों से नहीं अपितु छोटी-छोटी बातों से होता है। उन्होंने कहा कि पीड़ा प्राकृत भी हो सकती है और परिस्थितिजन्य व स्वाभाविक भी, लेकिन दुख का संबंध अंत:करण, मन से है। अध्यात्म विद्या सर्वात्मक बनाती है। धर्म अभय नहीं निर्भय करता है। वेदांत या ब्रह्मविद्या या अध्यात्म विद्या अभयदान करती है, क्योंकि अभय केवल आत्मा का स्वरूप हो सकता है। जहां भी भेद है वहां अभय संभव ही नहीं है।

भारतीय दर्शन, भारतीय चिंतन किसी को जड़ नहीं मानता। जो जड़ है उसमें भी हम चेतन का आह्वान करते हैं। जो सकारात्मक परम्पराएं हैं उन्हें इस भाव से निरंतर रखें कि वे हमारे पूर्वजों से आई हैं और फिर उनकी वैज्ञानिकता भी समझने की कोशिश करें। जब ब्रह्म ज्ञान हो जाता है तभी सूक्ष्म शरीर का नाश होता है। हमें अपने परिवारों को पुष्ट करना बहुत जरूरी है। सभी के परिवार पुष्ट होंगे तो ही हम उन्हें राष्ट्रीय चेतना से जोड़ सकते हैं, तभी राष्ट्र का एक कुटुम्ब का स्वरूप निर्मित हो सकता है। यदि भारत राष्ट्र कुटुंब के स्वरूप में आ जाए तो 'वसुधैव कुटुम्बकम' सिद्ध हो जाता है। विद्या भारती के राष्ट्रीय महामंत्री अवनीश भटनागर व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. हुकम सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. रामेन्द्र सिंह, कृष्ण कुमार भंडारी, श्रीमती विष्णु कान्ता भंडारी आदि उपस्थित रहे।

श्रीमदभगवदगीता पाठ्यक्रम प्रमाण पत्र

कुल पंजीकरण 109

- ज्ञानार्जन एवं प्रमाण पत्र के लिए प्रतिभागी - 78
- ज्ञानार्जन के लिए प्रतिभागी - 31

'पराक्रम दिवस' के निमित्त "सुघोष दर्शन" कार्यक्रम

मध्य भारत। पराक्रम दिवस' व 'स्वाधीनता के अमृत महोत्सव' के निमित्त विद्या भारती मध्य भारत प्रांत द्वारा "सुघोष दर्शन" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 1500 घोष वादक भैया-बहनों ने ॐ, स्वस्तिक सहित अन्य आकृतियाँ तैयार करते हुए आकर्षक घोष वादन किया।

कार्यक्रम में श्री शिवराजसिंह चौहान (मा. मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश शासन), श्री गोबिंद चंद्र महंत(अखिल भारतीय संगठन मंत्री विद्या भारती), श्री टी पी एस रावत (मेजर जनरल-सेवानिवृत्त) मुख्य अतिथि थे।

सीएम शिवराज जी ने कहा ,"रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद अमूल्य ग्रंथ हैं। इनमें मनुष्य को नैतिक व संपूर्ण बनाने की क्षमता है। इन पवित्र ग्रंथों की शिक्षा देकर हम अपने बच्चों को संपूर्ण व नैतिक बनायेंगे। "

ई पत्रिका "प्रज्ञा संदेश" का विमोचन

भोपाल। विद्या भारती संवाद केंद्र भोपाल की मासिक ई-पत्रिका "प्रज्ञा संदेश" का विमोचन विद्या भारती मध्यक्षेत्र कार्यालय "अक्षरा" के आईसीटी केंद्र में मा. क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री भालचंद रावले जी, प्रांतीय संगठन मंत्री श्री निखिलेश जी महेश्वरी की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर अन्य क्षेत्रीय एवं प्रांतीय अधिकारी व प्रचार विभाग की टोली के सदस्य उपस्थित रहे।

बाल मेला शिशु नगरी का आयोजन

जोधपुर। पाली। मण्डिया रोड स्थित सरस्वती शिशु मन्दिर में बाल मेला एवं शिशु नगरी का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन विधायक ज्ञानचन्द पारख एवं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र बोहरा ने किया। इस दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत खेल-खेल में शिक्षा तथा बिना बस्ता श्रव्य-दृश्य आधारित शिक्षा के उदेश्य की पूर्ति में बाल नगरी की बसावट की गई। पांच कर्मेन्द्रियों तथा पांच ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से बालकों के प्राणिक, मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए विज्ञान प्रयोगशाला, कलाशाला. वस्तु संग्रहालय, प्रदर्शनी, रंगमंच, कार्यशाला, चित्र पुस्तकालय, आदर्शघर, आदर्श ग्राम, शिशु बाजार, जिला गायत्री परिवार का साहित्य संग्रह, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि संपादित किए। इस अवसर पर भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष महेन्द्र बोहरा, भारतीय जैन संघ के अध्यक्ष रमेश बरडिया, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष सुनील गुप्ता, समाजसेवी पुखराज लसौड़, घनपत चोपड़ा, सुनील पौद्दार, राजस्थान क्षेत्र शिशु वाटिका प्रमुख ओमप्रकाश शर्मा, प्रान्त सचिव महेन्द्र दवे, प्रान्त निरिक्षक गंगाविष्णु आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सरस्वती शिशु मंदिर के छात्र-छात्राओं की सफलता का मंत्र मेधावी छात्र शैक्षिक वर्ग, सागर

27 विधालयों के कक्षा दशम् 119 छात्र-छात्राओं को 3 दिन का प्रशिक्षण देकर उनकी सारी समस्याओं का किया निवारण। बोर्ड परीक्षाओं की कैसे तैयारी करें , इसके भी दिए टिप्स ...

संगीत विषय की अखिल भारतीय कार्यशाला

विद्या भारती संगीत शिक्षा की अखिल भारतीय बैठक, दिनांक - 30 दिसम्बर 2022 से 01 जनवरी 2023 तक, स्थान - श्री शारदाचामम्, बंड्लगूठा जागीर, किस्मतपुरा रोड, राजेंद्रनगर मंडल, भाग्य नगर (हैदराबाद) तेलगांना में सम्पन्न हुआ।

बैठक में अखिल भारतीय संगीत शिक्षा संयोजक श्री विनोद द्विवेदी, एवं क्षेत्र व प्रान्त के संयोजक तथा सह संयोजक सहित 53 प्रतिभागी रहे। इस बैठक में श्री सुधाकर रेड्डी संगठन मंत्री दक्षिण मध्य क्षेत्र, डा. उमा महेश्वर राव-दक्षिण मध्य क्षेत्र अध्यक्ष श्री हेमचन्द्र जी क्षेत्रीय संगठन मंत्री, पूर्वी क्षेत्र श्री दिवाकर जी क्षेत्रीय संगठन मंत्री, पूर्व क्षेत्र, प्रो० तरफ पल्ली तिरूपति राव (पूर्व कुलपति) तथा श्री भगवतुता सुधाकर शर्मा (दक्षिण भारतीय संगीतज्ञ) का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

दीप प्रज्वलन व सरस्वती वन्दना के साथ बैठक प्रारम्भ हुई। मुख्य अतिथि महोदय ने सरस्वती वन्दना से प्रभावित होकर कहा कि देश के सभी विद्यालयों में इसी प्रकार से वन्दना सभा का आयोजन होना चाहिए, इससे देश में संस्कारक्षम वातावरण तैयार होगा। वन्दना सभा को सम्बोधित करते हुए श्रीमान् हेमचन्द्र जी ने कहा कि शिक्षा का काम केवल अक्षर ज्ञान तथा पाठ्यक्रम तैयार करना नहीं है। छात्रों में देशभक्ति तथा सद्-संस्कार से ओत-प्रोत शिक्षा का भाव जागाना विद्या भारती का उद्देश्य है। नानाजी देशमुख जैसे विचारकों ने इसी भाव के साथ 1952 में पक्कीबाग, गोरखपुर में विद्यालय की स्थापना की। विद्या भारती का उद्देश्य बालक का शारीरिक, प्राणिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास करना है। विद्या भारती के पांच

आधारभूत विषयों में संगीत शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया गया। इस बैठक में गत सत्र के कार्यों की समीक्षा तथा आगामी सत्र के लिए अखिल भारतीय वार्षिक हिन्दी गीत तथा संस्कृत गीत निर्धारित किये गए। बैठक में कुल 30 गीतों का अभ्यास हुआ। आगामी सत्र के लिए कार्य योजना बनाई गई, जो कि निम्न है-

1. पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन ठीक प्रकार से विद्यालयों में हो।
2. वन्दना प्रमुख सभी विद्यालयों में होना आवश्यक है।
3. रंगमंचीय कार्यक्रमों में सीडी अथवा पेन ड्राइव का प्रयोग करने के स्थान पर प्रत्यक्ष गायन वादन व नृत्य भैया-बहिनों द्वारा अपेक्षित है।
4. संगीत की तीनों विधाओं (नृत्य, गीत, वाय) का विकास हो।
5. वार्षिक गीत सभी विद्यालयों में हो तथा सभी भैया-बहिनों को याद हो, ऐसा प्रयास करना।
6. प्रान्त में संगीत टोली का गठन हो
7. संगीत प्रमुखों का प्रयास अपने क्षेत्र/प्रान्त में हो।
8. संगीत विषय के क्रियान्वयन हेतु प्रत्येक विद्यालय में संगीत विषय के लिए सप्ताह में दो कालांश दिये जायें।
9. सभी विद्यालयों में संगीत का पाठ्यक्रम पहुंचे।

वृत पत्रक के आधार पर अपने-अपने क्षेत्र/प्रान्त में कार्य करने का आग्रह किया गया।

शिक्षा विकास समिति, ओड़िशा

प्रादेशिक खेलकूद (एथलेटिक्स) समारोह

ओडिशा। शिक्षा विकास समिति, ओड़िशा की ओर से 34वें प्रादेशिक खेलकूद (एथलेटिक्स) समारोह का आयोजन 28 जनवरी से 30 जनवरी 2023 तक किया गया। खेलकूद प्रतियोगिताओं में 9 सम्भागों के 97 विद्यालयों से 198 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इससे पूर्व पारादीप के पौराध्यक्ष बसन्त कुमार विश्वाल जी ने खेलकूद समारोह का उद्घाटन किया और मुख्य वक्ता के रूप में विद्या भारती पूर्व क्षेत्र के संगठन मन्त्री दिवाकर घोष जी ने मार्गदर्शन किया। अध्यक्षता शिक्षा विकास समिति, ओड़िशा के अध्यक्ष किशोरचन्द्र महान्ति जी ने की। इस अवसर पर पूर्व सम्भाग के संपादक श्री प्रफुल्लचन्द्र पंडा व स्थानीय विद्यालय के संपादक डा. देबदत्त सामन्तराय उपस्थित रहे। समापन समारोह में मुख्य अतिथि कुजंग मंडल उन्नयन अधिकारी श्री सौम्यश्री पाणिग्राही, मुख्य वक्ता शिक्षा विकास समिति, ओड़िशा के संगठन संपादक श्री रमाकान्त महन्त, पूर्व सम्भाग संयोजक श्री शिरिश कुमार हाती आदि मौजूद रहे। अतिथि अधिकारी के रूप में क्षेत्र संगठन मन्त्री, प्रान्त संगठन मन्त्री, चार सम्भाग एवं प्रान्त अधिकारी, 84 स्थानीय प्रबन्धक शामिल रहे। इस प्रादेशिक खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी आगामी वर्ष विद्या भारती पूर्व क्षेत्र क्रीड़ा प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

विभिन्न विद्यालयों में आयोजित विद्यारंभ संस्कार / सरस्वती पूजन / बसंत पंचमी

विद्या धाम में फहराया गया देश की आन, बान और शान का प्रतीक 'तिरंगा'

भारत की समाज परंपरा में लोकतंत्र कूट कूट कर भरा है – दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

26 जनवरी, विद्या धाम जालंधर। 'भारत में प्राचीनकाल से ही अनेक 'गणराज्य' रहे हैं। राजतंत्र होने के बाद भी राजा समाज के सभी वर्गों की सहमति से ही राज्य के सभी कार्यों का संचालन करता था। लोकतंत्र के तीन स्तंभ विधायिका, कार्य पालिका और न्याय पालिका पूर्णतः समाज आधारित रही है। भारत की समाज परंपरा में लोकतंत्र कूट कूट कर भरा हुआ। देश में अनेक विभाजनकारी शक्तियों ने भारत के लोकतंत्र पर कुठाराघात किए परन्तु भारत के लोकतंत्र पर इन सभी कुठाराघातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आज भी भारत विश्व के सामने एक सबसे बड़े और मजबूत लोकतंत्र के रूप में गर्व व स्वाभिमान से खड़ा है।' यह ओजस्वी उद्गार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने विद्या धाम में गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर देश की आन, बान और शान तिरंगा फहराने के बाद व्यक्त किए। यह कार्यक्रम विद्या भारती पंजाब के संपर्क विभाग द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया था।

केंद्रीय उद्योग एवं वाणिज्य राज्य मन्त्री सोमप्रकाश, केन्द्रीय एस. सी. कमीशन के चेयरमैन विजय सांपला, दैनिक सवेरा समूह के मालिक और संपादक शीतल विज, विशेष अतिथि के नाते उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में क्षेत्र प्रचारक वनवीर सिंह, विद्या भारती के विजय नड्डा, राजेंद्र कुमार, हर्ष कुमार प्रांत प्रचारक नरेंद्र कुमार, सरदार ब्रिज भूषण सिंह बेदी, प्रांत संघचालक इकबाल सिंह और शहर के अनेक गणमान्य लोगों का इस कार्यक्रम मे सहभाग हुआ। वन्देमातरम के साथ उपरान्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

विद्या भारती के गौरवपूर्ण क्षण

एसएमबी गीता विद्यालय, कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्र श्री सुरेंद्र मेहरा, 1989 बैच नीति आयोग में सलाहकार के रूप में शामिल हुए।

श्रीमद्भगवद्गीता विद्यालय कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्र श्री ईश्वर सिंह, IPS को पंजाब में डीजीपी रैंक मिला। श्री ईश्वर सिंह को 2015 में राष्ट्रपति पुलिस मेडल से सम्मानित किया गया था।

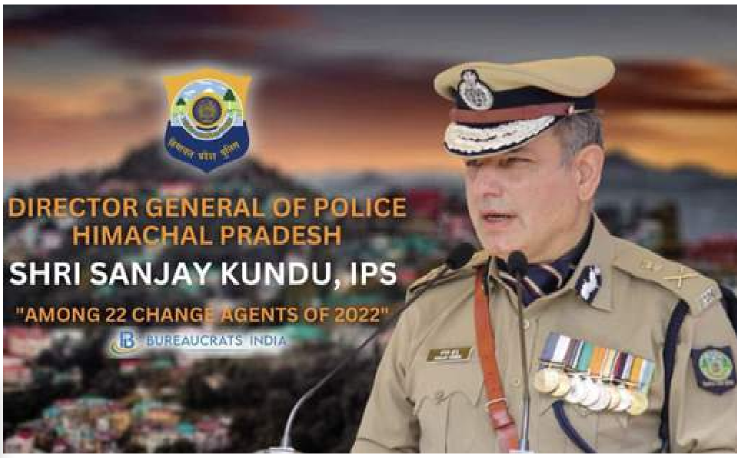

एसएमबी गीता विद्यालय कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्र श्री संजय कुंडू, आईपीएस डीजीपी - हिमाचल प्रदेश को 2022 के 22 परिवर्तन एजेंटों में से एक के रूप में नामित किया गया। श्री संजय कुंडू को 2022 की भारतीय नौकरशाही में शीर्ष प्रदर्शन करने वालों में शामिल किया गया है।

ज्योति सेवा न्यास द्वारा आयोजित सम्पूर्ण गीता गायन प्रतियोगिता में ग़ाज़ियाबाद के 20 विद्यालयों ने भाग लिया। अंतर विद्यालय गीता गायन प्रतियोगिता में उत्तम विद्यालय फॉर गर्ल्स ने प्रथम, महर्षि दयानंद सरस्वती विद्या मंदिर ने दूसरा, डीपीएस पब्लिक विद्यालय मेरठ रोड ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में न्यास के संरक्षक श्री राकेश जी, चिन्मय मिशन की संचालिका परिणीति चैतन्य (अम्मा जी), वागिश दिनकर जी, डॉ राम प्रकाश शर्मा जी उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन श्री विपिन राठी जी द्वारा किया गया ।

विद्याभारती के पूर्व संरक्षक, माननीय बिक्रम बहादुर जमातिया, हरी राधा विद्या मंदिर (विद्या भारती विद्यालय), त्रिपुरा को सामाजिक कार्य हेतु वर्ष 2023 का पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

विद्याभारती के पूर्व अखिल भारतीय सह मंत्री एवं सरस्वती विद्या मंदिर परिचालन समिति हाफलांग के संरक्षक माननीय श्री रामकुईवांबे जेमी को सामाजिक कार्य हेतु वर्ष 2023 का पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

विद्या भारती की उपलब्धियां

कार्तिक शर्मा - भारतीय कृषि शोध परिषद में फसल व वैज्ञानिक के नाते चयन (ARS) (कृषि शोध सेवा)
12वीं(पीसीबी) गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा व 10वीं गीता विद्या मंदिर, निगदू , करनाल, हरियाणा के छात्र रहे हैं।

ऋषभ त्रिपाठी - विद्या भारती के पूर्व छात्र ऋषभ त्रिपाठी ने भारतीय वायुसेना में फाइटर पायलट(फ्लाइंग ब्रांच) में अंतिम रूप से चयनित होकर गौरवान्वित किया ।
छात्र ऋषभ श्रीमद भगवद गीता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नारायणगढ़ जिला अम्बाला, का पूर्व छात्र हैं ।

इशिता शर्मा - जिला बिलासपुर के घुमारवीं उपमंडल की ग्राम पंचायत मरहाना के गांव पपलाह की इशिता शर्मा ने बी ए एम एस (बैचलर ऑफ आयुर्वेद मेडिसिन एंड सर्जरी) की परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल कर पंजाब में गोल्ड मेडल हासिल किया।
इशिता ने दसवी तक की शिक्षा एस वी एम स्कूल भराड़ी से प्राप्त की।

विद्या भारती के पूर्व छात्र अरुण कोहली को मॉर्गन स्टेनली फर्म ने यूरोप, मध्य पूर्व और अफ्रीका (ईएमईए) संचालन के लिए मुख्य परिचालन अधिकारी, भारत का प्रमुख नियुक्त किया है।
अरुण कोहली ने सरस्वती बाल मंदिर पटेल नगर में 1980 व झंडेवाला (आरामबाग) दिल्ली में 1980-83 के दौरान अध्ययन किया है।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली - 65

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net ।
www.vidyabharatisamvad.com

ई-मेल : vbabss@yahoo.com ।
vbsamvad@gmail.com
फोन: 91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में ,